

RNA : Real News Analysis

DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण

Key Point

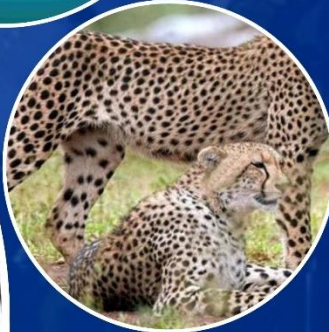
DATE

सितम्बर

26

2024

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defence News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors
13. Index



By Ankit Avasthi Sir

यूएनईपी की रिपोर्ट: विकासशील देशों में शीतलन बाजार (Cooling Market) का विस्तार

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) और इंटरनेशनल फाइनेंस कॉरपोरेशन (आईएफसी) द्वारा हाल में जारी की गई एक रिपोर्ट में बताया गया है कि विकासशील देशों में शीतलन बाजार (Cooling Market) 2050 तक लगभग 300 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 600 बिलियन अमेरिकी डॉलर प्रति वर्ष होने की संभावना है। इस वृद्धि का सबसे तेज असर अफ्रीका में देखने को मिलेगा, जहाँ बाजार सात गुना बढ़ जाएगा, जबकि दक्षिण एशिया में यह चार गुना बढ़ने की उम्मीद है।



रिपोर्ट के मुख्य निष्कर्ष:

- ✓ **टिकाऊ शीतलन तकनीकें:** रिपोर्ट में निष्क्रिय, ऊर्जा-कुशल और पर्यावरण के अनुकूल शीतलन समाधानों को प्राथमिकता देने की सिफारिश की गई है। यह सुझाव दिया गया है कि टिकाऊ शीतलन तकनीकें 2050 तक विकासशील देशों में शीतलन से संबंधित उत्सर्जन को लगभग आधा कर सकती हैं।
- ✓ **बढ़ती मांग:** रिपोर्ट के अनुसार, विकासशील अर्थव्यवस्थाएँ, जो वर्तमान में वैश्विक शीतलन-संबंधित उत्सर्जन का दो-तिहाई उत्पन्न करती हैं, जनसंख्या वृद्धि, आर्थिक विकास और शहरीकरण के कारण अपनी शीतलन मांग को दोगुना करने की ओर अग्रसर हैं।

प्राथमिकताएँ और सिफारिशें:

- ✓ **निष्क्रिय शीतलन रणनीतियाँ:** इन्सुलेशन, परावर्तक सामग्री और हरित क्षेत्रों को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करना।
- ✓ **ऊर्जा प्रदर्शन मानक:** नए भवनों के लिए न्यूनतम ऊर्जा प्रदर्शन मानकों और ऊर्जा कोडों को लागू करना।
- ✓ **संविधान दृष्टिकोण:** शीत श्रृंखलाओं और बड़ी शीतलन अवसंरचना सेवाओं के लिए एक प्रणाली दृष्टिकोण अपनाना।
- ✓ **नवाचार को बढ़ावा देना:** अनुसंधान एवं विकास को प्रोत्साहित करने के लिए प्रोत्साहन प्रदान करना।

टिकाऊ शीतलन समाधान की आवश्यकता:

- ✓ **ग्रह को और अधिक गर्म करने वाले समाधानों से बचना:** पारंपरिक शीतलन तकनीकें, जैसे एयर कंडीशनिंग, जलवायु परिवर्तन को बढ़ा सकती हैं। इसलिए, ऐसे समाधानों को अपनाना ज़रूरी है जो शीतलन की मांग को पूरा करते हुए पर्यावरण को नुकसान न पहुँचाएँ।
- ✓ **उत्सर्जन का बढ़ता हिस्सा:** विकासशील देशों से शीतलन से संबंधित उत्सर्जन का लगभग 66% उत्पन्न होता है, जो 2050 तक बढ़कर 80% हो सकता है। इन देशों में शीतलन की मांग को संतुलित करने के लिए टिकाऊ विकल्पों की आवश्यकता है।
- ✓ **उच्च बाजार संभावना:** टिकाऊ शीतलन बाजार 2050 तक प्रति वर्ष 600 बिलियन अमेरिकी डॉलर को पार कर जाने की उम्मीद है, जो एक महत्वपूर्ण आर्थिक अवसर प्रस्तुत करता है। यह विकासशील देशों के लिए लगभग 8 ट्रिलियन डॉलर का लाभ भी उत्पन्न कर सकता है।
- ✓ **जलवायु परिवर्तन से संबंधित दुर्घटनाओं में कमी:** ग्लोबल वार्मिंग के कारण प्रतिवर्ष लगभग 5 लाख लोगों की मृत्यु हो जाती है। टिकाऊ शीतलन समाधानों को अपनाने से स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा और जलवायु परिवर्तन के खतरों को कम किया जा सकेगा।
- ✓ **सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) को प्राप्त करना:** टिकाऊ शीतलन समाधानों को अपनाने से जलवायु कार्रवाई (SDG 13) जैसे लक्ष्यों की पूर्ति में सहायता मिलेगी।

विकासशील देशों के समक्ष चुनौतियाँ

प्रणालीगत मुद्दे:

- ✓ **मांग पक्ष:** उच्च प्रारंभिक लागत और उच्च जोखिम के कारण टिकाऊ शीतलन समाधानों को अपनाने में कठिनाई होती है।
- ✓ **आपूर्ति पक्ष:** छोटी कंपनियों के लिए वित्तपोषण के सीमित स्रोत, आपूर्ति श्रृंखला संबंधी समस्याएँ, और पारंपरिक वित्तीय क्षेत्र में इसकी मान्यता की कमी।

मुख्य अनुशंसाएँ:

- विनियमन एवं सुरक्षा उपाय:** न्यूनतम ऊर्जा प्रदर्शन मानकों, दक्षता, और स्थिरता मानकों को मजबूत करना आवश्यक है।
- वित्तपोषण:**
 - ✓ सार्वजनिक वित्तपोषण का विस्तार करना।
 - ✓ निजी पूंजी जुटाना।
 - ✓ घरों के लिए खुदरा वित्त जैसे ज़रूरतों के आधार पर वित्तपोषण मॉडल विकसित करना।
- बाजार पर नज़र रखना:** जैसे-जैसे कूलिंग मार्केट बढ़ता है, उसके प्रभावों और वित्तपोषण की दिशा पर ध्यान देना ज़रूरी है।

भारत की पहल:

- ✓ **भारत शीतलन कार्य योजना, 2019:** यह योजना टिकाऊ शीतलन तकनीकों को अपनाने के लिए रणनीतियाँ प्रदान करती है।
- ✓ **ऊर्जा संरक्षण भवन संहिता:** ऊर्जा दक्षता ब्यूरो द्वारा विकसित, यह कोड निर्माण में ऊर्जा दक्षता को प्रोत्साहित करता है।
- ✓ **सुपर-एफिशिएंट एयर कंडीशनिंग कार्यक्रम: एनर्जी एफिशिएंसी सर्विसेज लिमिटेड (ईईएसएल) द्वारा चलाया जाता है, जिससे उच्च ऊर्जा दक्षता वाले एयर कंडीशनर्स का प्रचार किया जाता है।**

अंतरिक्ष में महिला नेतृत्व कार्यक्रम

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) ने ब्रिटिश काउंसिल के सहयोग से ब्रिटेन-भारत शिक्षा एवं अनुसंधान पहल (यूकेआईआईआरआई) के अंतर्गत 24 सितंबर, 2024 को अंतरिक्ष में महिला नेतृत्व कार्यक्रम (डब्ल्यूआईएसएलपी) का शुभारंभ किया।

अंतरिक्ष में महिला नेतृत्व कार्यक्रम:

अंतरिक्ष में महिला नेतृत्व कार्यक्रम का उद्देश्य एक ऐसा नेतृत्व ढांचा विकसित करना है जो महिलाओं को विशेष रूप से अंतरिक्ष विज्ञान और संबद्ध क्षेत्रों में लिंग-समावेशी प्रथाओं और नीतियों को लागू करने में मदद करे। यह पहल महिलाओं के नेतृत्व को बढ़ावा देने और संस्थानों में समावेशी संस्कृति को बढ़ावा देने पर केंद्रित है।



कार्यप्रणाली:

- ✓ यह कार्यक्रम कोवेंद्री विश्वविद्यालय के सहयोग से कार्यान्वित किया जा रहा है।
- ✓ कार्यक्रम तीन मुख्य स्तंभों पर आधारित है:
 - ✦ **महिलाओं की पहचान के पहलुओं की अंतःक्रियाशीलता:** यह स्तंभ महिलाओं की पहचान के विभिन्न पहलुओं को समझने और उनके बीच संबंधों को बढ़ावा देता है।
 - ✦ **सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील दृष्टिकोण:** यह भारत में महिलाओं के सामने आने वाली अवसरों और चुनौतियों का जवाब देने के लिए एक सहयोगात्मक दृष्टिकोण विकसित करता है।
 - ✦ **नेतृत्व सिद्धांत का उपयोग:** सामाजिक विज्ञान और STEM (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित) से जुड़े नेतृत्व सिद्धांतों का उपयोग करके महिलाओं को उनकी नेतृत्व क्षमताओं के प्रति आत्मविश्वास बढ़ाने में सहायता करता है।

यूके-भारत शिक्षा एवं अनुसंधान पहल (UKIERI):

- ✓ **स्थापना:** यूके-भारत शिक्षा एवं अनुसंधान पहल (UKIERI) 2006 में स्थापित किया गया था और यह दोनों देशों के बीच शिक्षा और अनुसंधान के लिए प्रमुख द्विपक्षीय सहयोग कार्यक्रम है।
- ✓ **उद्देश्य:** UKIERI का उद्देश्य यूके और भारत के बीच शिक्षा और अनुसंधान सहयोग को मजबूत करके दोनों देशों को उनकी ज्ञान संबंधी महत्वाकांक्षाओं को प्राप्त करने में मदद करना है।
- ✓ **चरण:** UKIERI को 2006 से 2022 तक तीन चरणों में लागू किया गया। चौथा चरण 2023 में शुरू हुआ, जिसका लक्ष्य:
 - ☀ शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार के क्षेत्रों में द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करना।
 - ☀ साझा वैश्विक चुनौतियों का समाधान करना।
 - ☀ सतत विकास को बढ़ावा देना।

निष्कर्ष: अंतरिक्ष में महिला नेतृत्व कार्यक्रम और UKIERI दोनों ही महत्वपूर्ण पहलें हैं जो महिलाओं के नेतृत्व को बढ़ावा देने और शिक्षा एवं अनुसंधान के माध्यम से भारत और यूके के बीच सहयोग को मजबूत करने के लिए कार्यरत हैं। ये कार्यक्रम न केवल महिला नेतृत्व को बढ़ावा देते हैं, बल्कि वैश्विक चुनौतियों का सामना करने के लिए सामूहिक प्रयासों को भी प्रेरित करते हैं।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (DST) के बारे में

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (DST) की स्थापना मई 1971 में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नए अनुसंधान और विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से की गई थी। यह विभाग भारत सरकार के अंतर्गत विज्ञान और प्रौद्योगिकी से संबंधित गतिविधियों के आयोजन, समन्वय और प्रोत्साहन में नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करता है। इसकी प्रमुख जिम्मेदारियां इस प्रकार हैं:

प्रमुख जिम्मेदारियां:

- ✓ विज्ञान और प्रौद्योगिकी से संबंधित नीतियों का निर्माण।
- ✓ कैबिनेट की वैज्ञानिक सलाहकार समिति से संबंधित मामले (एसएसीसी)।
- ✓ उभरते हुए क्षेत्रों पर विशेष जोर देने के साथ विज्ञान और प्रौद्योगिकी के नए क्षेत्रों को बढ़ावा देना।
- ✓ जैव ईंधन उत्पादन, प्रसंस्करण, मानकीकरण और अनुप्रयोगों के स्वदेशी प्रौद्योगिकी के विकास के लिए अपने अनुसंधान संस्थानों या प्रयोगशालाओं के माध्यम से अनुसंधान और विकास के विषय में संबंधित मंत्रालय या विभाग के साथ समन्वय;
- ✓ उप उत्पादों से मूल्य वर्धित रसायन विकास के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए अनुसंधान और विकास गतिविधियां।
- ✓ भावी विज्ञान
- ✓ पार-क्षेत्रीय संबंधों वाले विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों का समन्वय और एकीकरण जिसमें अनेक संस्थाओं और विभागों के हित और क्षमताएं हैं।
- ✓ उपक्रम अथवा आर्थिक रूप से वैज्ञानिक और तकनीकी सर्वेक्षण, अनुसंधान डिजाइन और विकास के प्रायोजन, जहां आवश्यक हो।
- ✓ वैज्ञानिक अनुसंधान संस्थानों, वैज्ञानिक संघों और निकायों के लिए समर्थन और अनुदान सहायता।

प्रोजेक्ट चीता: दो साल बाद की स्थिति

प्रोजेक्ट चीता, जो भारत में जंगली चीता की अफ्रीकी उप-प्रजाति को पुनर्स्थापित करने के लिए शुरू किया गया था, ने 17 सितंबर को अपने दो साल पूरे कर लिए हैं। इस परियोजना के दो मुख्य उद्देश्य हैं: मध्य भारत में चीतों की स्थिर प्रजनन आबादी स्थापित करना और प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्रों को बहाल करने के लिए चीतों को एक छत्र प्रजाति के रूप में उपयोग करना।

परियोजना की प्रगति:

- ✓ **चीता स्थानांतरण:** प्रोजेक्ट चीता की शुरुआत कुनो नेशनल पार्क में नामीबिया और दक्षिण अफ्रीका से चीतों के अंतरमहाद्वीपीय स्थानांतरण से हुई। पहले चरण में 20 चीतों को लाया गया, जिनमें से 12 वयस्क और 8 शावक शामिल थे।
- ✓ **बचाव की स्थिति:** दो साल में, 24 चीतों में से 12 वयस्क और 12 शावक जीवित हैं। हालांकि, इस दौरान 40% चीतों की मृत्यु हो गई, जिसमें विभिन्न कारण शामिल हैं जैसे संक्रमण और प्राकृतिक घटनाएँ।
- ✓ **प्रजनन:** चीतों ने 17 शावकों को जन्म दिया, जिनमें से 12 जीवित हैं, जो एक सकारात्मक संकेत है।

प्रमुख चुनौतियाँ:

- ✦ **स्वास्थ्य और सुरक्षा:** पिछले साल, एक चीता, पवन, की डूबने से मृत्यु हो गई, जिससे सभी चीतों को बाड़ों में वापस लाना पड़ा। इससे चीतों के जंगल में स्थायी निवास स्थापित करने की क्षमता पर सवाल उठते हैं।
- ✦ **शिकार की कमी:** कुनो नेशनल पार्क में चीते के मुख्य शिकार चीतल की आबादी में कमी आई है। 2021 में चीतल का घनत्व 23.43 जानवर प्रति वर्ग किमी से घटकर 2024 में 17.5 जानवर प्रति वर्ग किमी रह गया है। यह चीतों के लिए आवश्यक शिकार की संख्या को पूरा करने के लिए काफी कम है।

आगे की राह:

- ☑ **अंतरराज्यीय संरक्षण योजनाएँ:** चीतों के लिए उपयुक्त आवास स्थापित करने के लिए मध्य प्रदेश और राजस्थान में संरक्षित क्षेत्रों का संरक्षण किया जाएगा। इस भूदृश्य को स्थापित करने के लिए शिकार प्रबंधन, अंतरराज्यीय समन्वय और पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।
- ☑ **समुदाय की भागीदारी:** परियोजना के लिए स्थानीय समुदायों की भागीदारी और जागरूकता आवश्यक है, ताकि चीता संरक्षण के प्रति समर्थन बढ़े।

निष्कर्ष: प्रोजेक्ट चीता ने अपने दो वर्षों में कुछ मामूली सफलताएँ हासिल की हैं, लेकिन इसके दीर्घकालिक उद्देश्यों के लिए कई चुनौतियाँ और सवाल अभी भी बने हुए हैं। भविष्य में, चीतों की बेहतर स्थिति और उनकी स्थायी आबादी स्थापित करने के लिए गेस योजनाएँ और प्रयास आवश्यक हैं।



कुनो राष्ट्रीय उद्यान (Kuno National Park):

- ✓ **स्थान:** कुनो राष्ट्रीय उद्यान मध्य प्रदेश के श्योपुर और मुरैना जिलों में स्थित है। इसका नाम कुनो नदी के नाम पर रखा गया है।
- ✓ **स्थापना:** इसे 1981 में वन्यजीव अभयारण्य का दर्जा दिया गया, 2018 में इसे राष्ट्रीय उद्यान का दर्जा प्राप्त हुआ।
- ✓ **क्षेत्रफल:** इस राष्ट्रीय उद्यान का क्षेत्रफल 344.686 वर्ग किमी (133.084 वर्ग मील) है।

कुनो राष्ट्रीय उद्यान में पाये जाने वाले वन्यजीव:

- ☑ **मांसाहारी:** भारतीय तेंदुआ, दक्षिण-पूर्व अफ्रीकी चीता, मगरमच्छ, घड़ियाल, जंगली बिल्ली, सुस्त भालू, ढोले, भारतीय भेड़िया, भारतीय सियार, घारीदार लकड़बग्घा, बंगाल लोमड़ी।
- ☑ **गाय एवं हिरण:** चीतल, सांभर, नीलगाय, चौसिंगा, चिंकारा, काला हिरण, जंगली सूअर।
- ☑ **प्रमुख पक्षी:** भारतीय गिद्ध, ब्राउन फिश उल्लू, मोर, स्पॉटेड उल्लू।
- ☑ **प्रोजेक्ट चीता:** यह परियोजना चीता पुनर्वास परियोजना के तहत 17 सितंबर 2022 को शुरू की गई थी।

'मेक इन इंडिया'

भारत को वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में सशक्त बनाने के लिए 25 सितंबर, 2014 को शुरू की गई 'मेक इन इंडिया' पहल के इस वर्ष 10 वर्ष पूर्ण हो गए हैं। इस पहल ने कई महत्वपूर्ण बदलाव लाए हैं, जैसे घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा, नवाचार में वृद्धि, कौशल विकास, और विदेशी निवेश को सुविधाजनक बनाना।

प्रभाव के 10 वर्ष: मुख्य बिंदु

✓ प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई):

- भारत ने 2014 से 667.4 बिलियन अमेरिकी डॉलर का संघर्षी एफडीआई आकर्षित किया है, जो पिछले दशक (2004-14) की तुलना में 119% की वृद्धि दर्शाता है।
- यह निवेश 31 राज्यों और 57 क्षेत्रों में फैला हुआ है, जो विभिन्न उद्योगों के विकास को बढ़ावा देता है।



✓ उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना:

- 2020 में शुरू की गई पीएलआई योजनाओं के तहत, जून 2024 तक 1.32 लाख करोड़ रुपए का निवेश और विनिर्माण उत्पादन में 10.90 लाख करोड़ रुपए की वृद्धि हुई है।
- इस पहल के माध्यम से 8.5 लाख से अधिक रोजगार के अवसर सृजित हुए हैं।

✓ निर्यात और रोजगार:

- वित्त वर्ष 2023-24 में भारत का व्यापारिक निर्यात 437 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक हो गया।
- विनिर्माण क्षेत्र में रोजगार 2017-18 में 57 मिलियन से बढ़कर 2022-23 में 64.4 मिलियन हो गया।

✓ व्यापार करने में आसानी:

- विश्व बैंक की इंडिंग बिजनेस रिपोर्ट में भारत 2014 में 142वें स्थान से 2019 में 63वें स्थान पर पहुंचा।
- 42,000 से अधिक अनुपालनों को कम किया गया और 3,700 प्रावधानों को अपराधमुक्त किया गया है।

प्रमुख सुधार और पहल:

- सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम विकास:** 76,000 करोड़ की लागत वाला सेमीकॉन इंडिया कार्यक्रम सेमीकंडक्टर और डिस्प्ले विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए नीतियां विकसित कर रहा है।
- राष्ट्रीय एकल खिड़की प्रणाली (एनएसडब्ल्यूएस):** निवेशक अनुभव को सरल बनाने के लिए एकीकृत मंच, जो त्वरित अनुमोदन की सुविधा देता है।
- पीएम गतिशक्ति:** यह राष्ट्रीय मास्टर प्लान विभिन्न मंत्रालयों के पोर्टलों के साथ डेटा-आधारित निर्णयों को सुविधाजनक बनाता है।
- राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स नीति (एनएलपी):** लॉजिस्टिक्स लागत को कम करने और दक्षता बढ़ाने के उद्देश्य से 2022 में शुरू की गई।
- एक जिला एक उत्पाद (ओडीओपी):** स्थानीय उत्पादों और शिल्प कौशल को बढ़ावा देने के लिए 27 राज्यों में यूनिटी मॉल स्थापित किए जा रहे हैं।
- स्टार्टअप इंडिया:** 16 जनवरी 2016 को शुरू की गई इस पहल के तहत मान्यता प्राप्त स्टार्टअप की संख्या 30 जून 2024 तक 1,40,803 हो गई है।

मेक इन इंडिया पहल:

मेक इन इंडिया पहल का मुख्य उद्देश्य निवेश को सुविधाजनक बनाना, नवाचार को बढ़ावा देना, कौशल विकास को प्रोत्साहित करना, बौद्धिक संपदा की रक्षा करना, और सर्वोत्तम विनिर्माण बुनियादी ढांचे का निर्माण करना है।

चार स्तंभों पर आधारित:

- नई प्रक्रियाएँ:** उद्यमशीलता को बढ़ावा देने के लिए व्यापार करने में आसानी को सबसे महत्वपूर्ण कारक माना गया है। यह प्रक्रिया निवेशकों को सरल और तेज तरीके से व्यावसायिक गतिविधियों में शामिल होने का अवसर प्रदान करती है।
- नवीन अवसंरचना:** यह पहल अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी पर आधारित अवसंरचना प्रदान करने का लक्ष्य रखती है, जिससे विनिर्माण और सेवा क्षेत्र में गुणवत्ता और दक्षता में वृद्धि हो सके।
- नये क्षेत्र:** मेक इन इंडिया 2.0 के अंतर्गत विनिर्माण, बुनियादी ढांचे, और सेवा गतिविधियों में 27 क्षेत्रों की पहचान की गई है, जो आर्थिक विकास में सहायक सिद्ध होंगे।
- नई सोच:** सरकार नियामक की बजाय सुविधा प्रदाता के रूप में कार्य करेगी, जिससे व्यवसायों को आवश्यक सहायता और समर्थन मिल सके।

नोडल एजेंसियां:

- उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग:** यह विभाग विनिर्माण क्षेत्र के विकास के लिए प्रमुख जिम्मेदार है और नीतियों को लागू करने में सहायता करता है।
- वाणिज्य विभाग:** यह विभाग सेवा क्षेत्र के विकास पर ध्यान केंद्रित करता है और इस क्षेत्र में निवेश को बढ़ावा देने के लिए रणनीतियाँ विकसित करता है।

मृत्यु के बाद कोशिकीय कार्यशीलता



हाल ही में एक शोध में "तीसरी अवस्था" का प्रस्ताव रखा गया है, जो जीवन और मृत्यु की पारंपरिक परिभाषाओं को चुनौती देता है। इस शोध में यह दर्शाया गया है कि कुछ कोशिकाएँ और ऊतक जीव की मृत्यु के बाद भी कार्य करना जारी रख सकते हैं। यह निष्कर्ष जीवन और मृत्यु के बीच के रेखांकन को धुंधला करता है और इससे कई महत्वपूर्ण प्रश्न उत्पन्न होते हैं, विशेषकर कोशिकीय क्षमताओं, जीव विज्ञान और चिकित्सा के संदर्भ में।

"तीसरी अवस्था": जीवन और मृत्यु की नई परिभाषा

"तीसरी अवस्था" की अवधारणा एक ऐसी स्थिति को दर्शाती है जहाँ कोशिकाएँ और ऊतक जीवन और मृत्यु की पारंपरिक परिभाषाओं को चुनौती देते हैं। इस शोध से पता चलता है कि कुछ कोशिकाएँ जीव की मृत्यु के बाद भी कार्य करना और अनुकूलन करना जारी रख सकती हैं, जिससे जीव विज्ञान और चिकित्सा के क्षेत्र में नए प्रश्न उत्पन्न होते हैं।

मृत्यु के बाद कोशिकीय कार्यशीलता के उदाहरण:

1. ज़ेनोबॉट्स:

- मृत मेंढक के भ्रूणों की त्वचा की कोशिकाएँ स्वतः नई बहुकोशिकीय संरचनाएँ बनाती हैं, जिन्हें ज़ेनोबॉट्स कहा जाता है।
- ये ज़ेनोबॉट्स अपने मूल जैविक कार्यों से परे व्यवहार प्रदर्शित करते हैं और सिलिया (छोटे बाल जैसे उभार) का उपयोग करके अपने परिवेश में नेविगेट और गति करते हैं। जबकि जीवित मेंढक भ्रूणों में सिलिया का कार्य न्यूकस को गति देना होता है।
- ज़ेनोबॉट्स में सेल्फ-रेप्लिकेशन की क्षमता होती है, जिससे ये अपने नवीन प्रतिकृति बना सकते हैं, जो परिचित प्रतिकृति विधियों से भिन्न होती हैं।

2. एन्थ्रोबॉट्स:

- अध्ययनों में यह पाया गया है कि मानव फेफड़ों की कोशिकाएँ स्वतः छोटे, बहुकोशिकीय जीवों का निर्माण कर सकती हैं, जिन्हें एन्थ्रोबॉट्स कहा जाता है।
- ये जैव-रोबोट अद्वितीय व्यवहार प्रदर्शित करते हैं, जैसे कि गतिशील होना, स्वयं की मरम्मत करना और निकटवर्ती क्षतिग्रस्त न्यूरोन कोशिकाओं को पुनर्स्थापित करना।

तीसरी अवस्था के निहितार्थ:

तीसरी अवस्था की धारणा जीवन और मृत्यु के पुनर्मूल्यांकन को प्रेरित करती है और यह सुझाव देती है कि जैविक प्रणालियाँ रैखिक जीवन चक्रों से बंधी हुई नहीं हो सकती हैं। इससे अंग संरक्षण और प्रत्यारोपण में सफलता मिल सकती है, जो दाता अंगों की व्यवहार्यता के साथ रोगी परिणामों में सुधार कर सकती है।

मृत्यु के बाद कोशिकाएँ किस प्रकार जीवित रहती हैं?

कोशिकीय दीर्घायु: विभिन्न कोशिकाओं की जीवित रहने की अवधि अलग-अलग होती है:

- श्वेत रक्त कोशिकाएँ: आमतौर पर मृत्यु के 60 से 86 घंटों के भीतर नष्ट हो जाती हैं।
- कंकालीय मांसपेशी कोशिकाएँ: चूहों में इन्हें मृत्यु के 14 दिनों तक पुनर्जीवित किया जा सकता है।
- फाइब्रोब्लास्ट कोशिकाएँ: भेड़ और बकरी की कोशिकाएँ मृत्यु के लगभग एक महीने बाद तक संवर्धित की जा सकती हैं।

प्रभावित करने वाले कारक: पर्यावरणीय परिस्थितियाँ (जैसे तापमान, ऑक्सीजन का स्तर), चयापचय गतिविधि, और संरक्षण तकनीकें (जैसे क्रायोप्रिजर्वेशन) मृत्यु के बाद कोशिकाओं और ऊतकों के अस्तित्व को प्रभावित करती हैं।

निष्कर्ष: यह शोध यह समझने में मदद करता है कि मृत्यु के बाद भी कुछ कोशिकाएँ कार्यशील रह सकती हैं, और यह जैविक प्रणालियों के विकास और चिकित्सा क्षेत्र में नए संभावित दिशा-निर्देश प्रदान करता है। "तीसरी अवस्था" के अध्ययन से जैव विज्ञान में नई खोजों और नैतिक विचारों की दिशा में एक नया मार्ग प्रशस्त हो सकता है।

मैसिव ऑस्ट्रेलियन प्रीकैम्ब्रियन-कैम्ब्रियन इम्पैक्ट स्ट्रक्चर (MAPCIS) क्रेटर

हाल ही में, ऑस्ट्रेलियाई शोधकर्ताओं ने एक विशाल प्रभाव क्रेटर का साक्ष्य खोजा है, जिसे **MAPCIS (Marsupial-Australian Impact Crater with Subsurface Structure)** नाम दिया गया है। यह खोज पृथ्वी के भूवैज्ञानिक इतिहास के अध्ययन में महत्वपूर्ण मोड़ ला सकती है।



मैसिव ऑस्ट्रेलियन प्रीकैम्ब्रियन-कैम्ब्रियन इम्पैक्ट स्ट्रक्चर (MAPCIS):

- ✓ यह क्रेटर मध्य ऑस्ट्रेलिया में स्थित है और लगभग **600 किलोमीटर** तक फैला हुआ है, जो इसे पृथ्वी पर खोजे गए सबसे बड़े **क्रेटरों** में से एक बनाता है।
- ✓ इस खोज के प्रमुख शोधकर्ता ने यह संभावना जताई है कि यह प्रभाव लगभग **538.8 मिलियन से 1 बिलियन वर्ष** पहले **नियोप्रोटेरोज़ोइक युग** के दौरान हुआ था।
- ✓ यह समयावधि पृथ्वी के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण दौर मानी जाती है, क्योंकि इस समय एडियाकरण काल का अंत हुआ था, जो प्राचीन जीवन रूपों की उपस्थिति से संबंधित है।

MAPCIS की विशेषताएं:

1. **स्यूडोटेचिलाइट ब्रेक्सिया** (पिघली चट्टान) के विशाल भंडार, जो क्रेटर के केंद्र के पास पाए गए।
 2. **लोन्सडेलाइट** जैसे आघातग्रस्त हीरों और अन्य आघातित खनिजों की उपस्थिति।
 3. **इरीडियम** की सांद्रता, जो आमतौर पर अंतरिक्ष से आने वाले **उल्कापिंडों** से संबंधित होती है।
- ⇒ ये निष्कर्ष इस बात का संकेत देते हैं कि पृथ्वी पर एक अत्यंत विशाल प्रलयकारी घटना हुई थी, जिसने न केवल **भूवैज्ञानिक** संरचनाओं को बल्कि **जैविक विकास** को भी प्रभावित किया हो सकता है।
- ⇒ यह डेटा उन शक्तियों की झलक देता है, जिन्होंने पृथ्वी की सतह को आकार दिया है और इससे पृथ्वी के अतीत के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त की जा सकती हैं।

वैज्ञानिक महत्व:

- ✓ **MAPCIS** क्रेटर को **गैर-केंद्रित जटिल क्रेटर** के रूप में वर्गीकृत किया गया है, जो इसे अद्वितीय बनाता है। यह क्रेटर हमारे ग्रह के **भूवैज्ञानिक और जैविक विकास** की गहरी समझ प्रदान कर सकता है और पृथ्वी के इतिहास में बड़े पैमाने पर प्रलयकारी घटनाओं की बेहतर व्याख्या कर सकता है।
- ✓ इस खोज के प्रमुख शोधकर्ता अपने निष्कर्षों को आगामी **जियोलाॅजिकल सोसायटी ऑफ अमेरिका** की वार्षिक बैठक में और **अंतर्राष्ट्रीय भूवैज्ञानिक सम्मेलन 2024** में प्रस्तुत करेंगे, जिससे इस खोज पर और अधिक चर्चा और शोध को प्रोत्साहन मिलने की उम्मीद है।
- ✓ यह खोज पृथ्वी के **भूवैज्ञानिक** इतिहास को **पुनर्लेखित** करने और हमारे ग्रह के अशांत अतीत को बेहतर ढंग से समझने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हो सकती है।

क्रेटर (Crater) क्या हैं?

क्रेटर एक **गोल आकार का विशाल गड्ढा** होता है, जो खगोलीय पिंडों की सतह पर अंतरिक्ष से किसी **उल्कापिंड के गिरने, ज्वालामुखी के फटने, भूगर्भ में विस्फोट, या अन्य किसी विस्फोटक गतिविधि** के परिणामस्वरूप बनता है।

क्रेटर के प्रकार:

- ✓ **प्रहार क्रेटर (Impact Crater):** यह **उल्कापिंडों** या **क्षुद्रग्रहों** के पृथ्वी पर गिरने से बनता है। इनका आकार और गहराई अक्सर उस पिंड के आकार और गति पर निर्भर करते हैं।
- ✓ **ज्वालामुखीय क्रेटर (Volcanic Crater):** ये क्रेटर ज्वालामुखी फटने पर बनते हैं। जब **ज्वालामुखी** में दाबित गैसें और लावा बाहर निकलते हैं, तो ये गड्ढे का निर्माण करते हैं।
- ✓ **घँसाव क्रेटर (Sinkhole Crater):** ये क्रेटर भूमि के घँसने से बनते हैं, अक्सर **कार्स्ट भू-आकृति विज्ञान** के कारण। यह तब होता है जब पानी **मिट्टी या चट्टान** के नीचे से बहता है, जिससे एक गड्ढा बनता है।
- ✓ **विस्फोट क्रेटर (Explosion Crater):** ये क्रेटर विस्फोटक सामग्री के प्रयोग से बनते हैं, जैसे कि **मानव निर्मित विस्फोट**। ये आमतौर पर छोटे होते हैं, लेकिन उनके आस-पास का क्षेत्र प्रभावित हो सकता है।
- ✓ **बिल क्रेटर (Bill Crater):** ये छोटे गड्ढे होते हैं, जो **प्रायः मिट्टी या अन्य सामग्रियों** के ढेर के कारण बनते हैं।
- ✓ **मार क्रेटर (Mare Crater):** ये चंद्रमा पर पाए जाने वाले गड्ढे हैं, जो प्रहार क्रेटरों से भरे हुए हैं। ये आमतौर पर विस्तृत और हल्के समतल होते हैं।

DRDO और आईआईटी दिल्ली ने हल्की बुलेट प्रूफ जैकेट विकसित की

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO) ने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) दिल्ली के शोधकर्ताओं के साथ मिलकर 'एबीएचडीडी' नामक हल्की बुलेट प्रूफ जैकेट तैयार की है। यह जैकेट DRDO और आईआईटी दिल्ली के संयुक्त प्रयासों का नतीजा है, जिसे आईआईटी दिल्ली स्थित DRDO इंडस्ट्री अकादमिक उत्कृष्टता केंद्र (डीआईए-सीओई) में विकसित किया गया है।



जैकेट की विशेषताएँ:

- ✓ **सामग्री:** यह जैकेट स्वदेशी बोरॉन कार्बाइड सिरेमिक और पॉलिमर सामग्री से बनाई गई है, जो इसे मजबूत और हल्का बनाती है।
- ✓ **डिजाइन:** इसका डिजाइन उच्च स्ट्रेन रेट पर विभिन्न सामग्री के अभिलक्षण पर आधारित है, जिसे DRDO के सहयोग से मॉडेलिंग और सिमुलेशन किया गया है।
- ✓ **वजन:** यह जैकेट भारतीय सेना की जनरल स्टाफ गुणात्मक आवश्यकता से हल्की है। इसका वजन 8.2 किलोग्राम और 9.5 किलोग्राम के बीच होता है, जो बीआईएस स्तरों के अनुरूप है।
- ✓ **सुरक्षा:** ये जैकेट 360 डिग्री सुरक्षा प्रदान करती हैं और सर्वाधिक खतरों से निपटने में सक्षम हैं।
- ✓ **उत्पादन:** कुछ भारतीय उद्योगों को प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के लिए चुना गया है, और केंद्र तीन उद्योगों को प्रौद्योगिकी हस्तांतरित करने के लिए तैयार है।

डीआईए-सीओई का गठन:

DRDO ने 2022 में उद्योग और अकादमिक संस्थानों को रक्षा अनुसंधान एवं विकास में शामिल करने के उद्देश्य से आईआईटी दिल्ली में स्थित संयुक्त उन्नत प्रौद्योगिकी केंद्र को संशोधित करके डीआईए-सीओई का गठन किया था। इस केंद्र का उद्देश्य उन्नत तकनीकों पर काम करना और विभिन्न परियोजनाओं को आगे बढ़ाना है।

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO): रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO) भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय के अंतर्गत कार्य करने वाला अनुसंधान और विकास (आर एंड डी) विंग है। इसका उद्देश्य अत्याधुनिक रक्षा प्रौद्योगिकियों में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना और भारतीय सशस्त्र बलों को आधुनिक हथियार प्रणाली और उपकरणों से सुसज्जित करना है। DRDO तीनों सेवाओं (थल सेना, वायु सेना, नौसेना) द्वारा निर्धारित आवश्यकताओं के अनुसार प्रौद्योगिकियों का विकास करता है, जिससे भारत की रक्षा क्षमता में निरंतर वृद्धि हो रही है।

DRDO का इतिहास:

DRDO का गठन 1958 में भारतीय सेना के तकनीकी विकास प्रतिष्ठान (TDEs), रक्षा विज्ञान संगठन (DSO), और तकनीकी विकास एवं उत्पादन निदेशालय (DTDP) के सम्मेलन से हुआ था। DRDO का आदर्श वाक्य: "बलस्य मूलम् विज्ञानम्" - अर्थात्, शक्ति का स्रोत विज्ञान है।

सर्वोच्च लेखा परीक्षा संस्थानों (SAI)

भारत की राष्ट्रपति ने हाल ही में सार्वजनिक धन की दक्षता और अखंडता सुनिश्चित करने में सर्वोच्च लेखा परीक्षा संस्थानों (SAI) की महत्वपूर्ण भूमिका पर विश्वास व्यक्त किया।

सर्वोच्च लेखा परीक्षा संस्थान (SAI) के बारे में:

- ✓ **परिभाषा:** ये सरकारी राजस्व और व्यय की लेखापरीक्षा के लिए जिम्मेदार सार्वजनिक निरीक्षण संस्थाएं हैं।
- ✓ **महत्व:** ये किसी देश की जवाबदेही प्रणाली का एक प्रमुख हिस्सा हैं, और सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन और रिपोर्टिंग की जांच करते हैं।
- ✓ **मूल भूमिका:** यह सुनिश्चित करना कि संसाधनों का उपयोग निर्धारित उद्देश्यों के अनुसार हो रहा है।
- ✓ **अधिकार स्रोत:** अधिकांश SAI का अधिदेश संविधान या कानून से प्राप्त होता है।
- ✓ **प्रमुख कार्य:**
 - **वित्तीय लेखा परीक्षण:** संगठनों की लेखा प्रक्रियाओं और वित्तीय विवरणों की समीक्षा।
 - **अनुपालन लेखा परीक्षण:** लेनदेन की वैधता की जांच।
 - **निष्पादन लेखा परीक्षा:** सरकारी उपक्रमों की दक्षता, प्रभावशीलता और मितव्ययिता का आकलन।
- ✓ **स्वतंत्रता:** SAI की स्वतंत्रता सरकारों को जवाबदेह बनाने में महत्वपूर्ण होती है और राज्य तथा समाज के बीच विश्वास निर्माण में इसकी भूमिका महत्वपूर्ण होती है।



भारत में CAG (नियंत्रक और महालेखा परीक्षक) और IAAD (भारतीय लेखा परीक्षा एवं लेखा विभाग) मिलकर भारत का SAI बनाते हैं।

सर्वोच्च लेखा परीक्षा संस्थानों का अंतर्राष्ट्रीय संगठन (INTOSAI):

- ⇨ **स्वरूप:** एक स्वैच्छिक और गैर-राजनीतिक संगठन, जिसकी स्थापना 1953 में हुई थी। वर्तमान में 192 सदस्य देशों के SAI इससे जुड़े हुए हैं।
- ⇨ **कार्य:** लेखा परीक्षा मानकों, सुशासन और SAI स्वतंत्रता को बढ़ावा देना, पेशेवर मानकों का विकास और ज्ञान साझाकरण।
- ⇨ **ECOSOC दर्जा:** इसे संयुक्त राष्ट्र की आर्थिक और सामाजिक परिषद (ECOSOC) में विशेष परामर्शदाता का दर्जा प्राप्त है।

संरचना:

- **INCOSAI:** सर्वोच्च अंग, जो सभी सदस्य देशों का प्रतिनिधित्व करता है। इसकी नियमित बैठकें हर तीन साल में आयोजित होती हैं।
- **गवर्निंग बोर्ड:** INTOSAI की वार्षिक बैठक के दौरान संगठन को रणनीतिक नेतृत्व और प्रबंधन प्रदान करता है।

भारत का CAG INTOSAI के शासी बोर्ड का सदस्य भी है, जिससे यह अंतर्राष्ट्रीय मंच पर सक्रिय रूप से योगदान दे रहा है।

वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (CAQM)

हाल ही में, सर्वोच्च न्यायालय ने पराली जलाने की घटनाओं और उनके विरुद्ध की गई कार्रवाई पर वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (CAQM) से रिपोर्ट मांगी है। वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (CAQM) एक वैधानिक निकाय है जिसे 2021 में राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) और आसपास के क्षेत्रों में वायु गुणवत्ता प्रबंधन के लिए स्थापित किया गया था।



वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (CAQM) के बारे में:

- ✓ **स्थापना:** CAQM की स्थापना वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग अधिनियम, 2021 के तहत की गई।
- ✓ **अधिदेश:** इसका मुख्य कार्य वायु गुणवत्ता सूचकांक से संबंधित समस्याओं का बेहतर समन्वय, अनुसंधान, पहचान, और समाधान करना है। यह दिल्ली-एनसीआर और आसपास के क्षेत्रों में वायु प्रदूषण को रोकने के लिए नीतियाँ और कार्य योजनाएँ बनाता है।

प्रमुख कार्य और शक्तियाँ:

- ✦ **वायु गुणवत्ता सुधार के उपाय:** आयोग वायु गुणवत्ता को प्रभावित करने वाली गतिविधियों पर प्रतिबंध लगा सकता है और वायु प्रदूषण से संबंधित अनुसंधान कर सकता है।
- ✦ **समन्वय:** यह आयोग दिल्ली और पड़ोसी राज्यों (पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश) के साथ समन्वय करता है ताकि वायु गुणवत्ता को नियंत्रित किया जा सके।
- ✦ **दिशा-निर्देश:** आयोग वायु प्रदूषण को रोकने और नियंत्रित करने के लिए कोड और दिशा-निर्देश तैयार करता है, जिनका पालन करना सभी के लिए बाध्यकारी होता है।
- ✦ **आदेश और निरीक्षण:** आयोग द्वारा दिए गए सभी निर्देशों और आदेशों का पालन अनिवार्य होता है, और यह आदेश व्यक्ति, अधिकारी या प्राधिकरण सभी पर लागू होते हैं।

संरचना:

- ☑ **अध्यक्ष:** इस आयोग के अध्यक्ष किसी सचिव या मुख्य सचिव स्तर के अधिकारी होते हैं। उनका कार्यकाल तीन वर्ष या 70 वर्ष की आयु तक होता है।
- ☑ **पदेन सदस्य:** दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, और उत्तर प्रदेश के मुख्य सचिव या पर्यावरण संरक्षण विभाग के सचिव इसके पदेन सदस्य होते हैं।
- ☑ **तकनीकी सदस्य:** तीन पूर्णकालिक तकनीकी सदस्य और भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO), केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB), और नीति आयोग के तकनीकी सदस्य भी आयोग में शामिल होते हैं।
- ☑ **गैर-सरकारी सदस्य:** आयोग में तीन सदस्य गैर-सरकारी संगठनों से होते हैं, जो वायु गुणवत्ता और पर्यावरण संरक्षण में योगदान देते हैं।

जवाबदेही: यह आयोग संसद के प्रति सीधे जवाबदेह होता है।

नगर वन योजना (NVY)

भारत सरकार ने नगर वन योजना (एनवीवाई) के तहत शहरी हरियाली को बढ़ावा देने और पर्यावरण संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। इस योजना का उद्देश्य शहरों में पर्यावरणीय संसाधनों का संरक्षण करते हुए जैव विविधता और जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना है।



नगर वन योजना की मुख्य बातें:

- ✓ **शुरुआत:** यह योजना पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा 2020 में शुरू की गई थी, जिसका उद्देश्य शहरों में शहरी हरियाली को बढ़ाना और पर्यावरणीय संतुलन को बनाए रखना है।
- ✓ **लक्ष्य:** सरकार का लक्ष्य वर्ष 2027 तक 1000 नगर वन विकसित करना है। वर्तमान में, 111 नगर वनों को मंजूरी दी गई है, जो 6 राज्यों और 1 केंद्र शासित प्रदेश में फैले हुए हैं।
- ✓ **वित्तीय सहायता:** प्रति हेक्टेयर 4 लाख रुपये की सहायता दी जाती है, जिससे नगर वनों के निर्माण और रखरखाव में नागरिकों, छात्रों, और अन्य हितधारकों की भागीदारी को प्रोत्साहित किया जाता है।
- ✓ **क्षेत्रफल:** प्रत्येक नगर वन का क्षेत्रफल 10 से 50 हेक्टेयर के बीच होता है, जिसमें फलदार, औषधीय और देशी प्रजातियों के पौधों का रोपण किया जाता है।
- ✓ **सामुदायिक भागीदारी:** वृक्षारोपण और संरक्षण में समुदाय, एनजीओ, और नागरिकों की भागीदारी केंद्रीय भूमिका निभाती है। इसमें जैव विविधता पार्क, स्मृति वैन, तितली संरक्षण केंद्र, और हर्बल गार्डन जैसी सुविधाएँ भी शामिल होंगी।
- ✓ **हरित भूमि संरक्षण:** इस पहल से शहरी क्षेत्रों में वन भूमि को अतिक्रमण और क्षरण से बचाया जाएगा और वायु प्रदूषण, शहरी ताप द्वीप जैसी समस्याओं का समाधान होगा।

'एक पेड़ मां के नाम' अभियान:

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 5 जून 2024 को विश्व पर्यावरण दिवस पर इस अभियान की शुरुआत की। इस अभियान का उद्देश्य पेड़ लगाने के माध्यम से माताओं और धरती मां के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना है।

- ☑ **लक्ष्य:** सितंबर 2024 के अंत तक 80 करोड़ और मार्च 2025 के अंत तक 140 करोड़ पेड़ लगाने का लक्ष्य रखा गया है।
- ☑ **प्लान्टेशन ट्रैकिंग:** कोई भी व्यक्ति या संस्था अपने वृक्षारोपण प्रयासों का विवरण मेरीलाइफ पोर्टल पर अपलोड कर सकती है, जिससे इस अभियान की प्रगति की निगरानी हो सके।

यह पहल न केवल पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देती है, बल्कि व्यक्तिगत और सामुदायिक स्तर पर वृक्षारोपण की संस्कृति को भी विकसित करती है, जिससे भूमि क्षरण, सूखा प्रतिरोधकता, और मरुस्थलीकरण को रोका जा सके।

डिजिटल स्वास्थ्य और गैर-संचारी रोगों से मौतों की रोकथाम

हाल ही में, विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) और अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ (ITU) ने एक नई रिपोर्ट जारी की है, जिसमें कहा गया है कि डिजिटल स्वास्थ्य हस्तक्षेपों, जैसे टेलीमेडिसिन, मोबाइल मैसेजिंग और चैटबॉट्स में प्रति वर्ष प्रति मरीज केवल US\$0.24 का अतिरिक्त निवेश करने से अगले दशक में 2 मिलियन से अधिक लोगों की जान बचाई जा सकती है। इस निवेश से लगभग 7 मिलियन गंभीर घटनाओं और अस्पताल में भर्ती होने से भी बचा जा सकता है, जिससे वैश्विक स्वास्थ्य सेवा प्रणालियों पर दबाव कम होगा।

रिपोर्ट का विमोचन:

- ✓ रिपोर्ट "गैर-संचारी रोगों के लिए डिजिटल होना: कार्डवाई का मामला" शीर्षक से है।
- ✓ इसका विमोचन 79 वीं संयुक्त राष्ट्र महासभा के दौरान गाम्बिया सरकार द्वारा ITU और WHO के सहयोग से आयोजित एक कार्यक्रम में किया गया।

गैर-संचारी रोग (NCDs):

गैर-संचारी रोग, जैसे हृदय रोग, कैंसर, मधुमेह और पुरानी श्वसन संबंधी बीमारियाँ, सालाना 74% से अधिक वैश्विक मौतों के लिए जिम्मेदार हैं। इन बीमारियों से निपटने के लिए डिजिटल स्वास्थ्य प्रौद्योगिकियों का एकीकरण आवश्यक है।

जोखिम कारक:

- ☼ तंबाकू का सेवन
- ☼ अस्वास्थ्यकर आहार
- ☼ शराब का हानिकारक उपयोग
- ☼ शारीरिक निष्क्रियता



इन जोखिम कारकों को समझने और स्वस्थ आदतें विकसित करने में डिजिटल उपकरण मदद कर सकते हैं।

रिपोर्ट के प्रमुख बिंदु:

- ✓ **जीवन सुरक्षा:** अगले दशक में गैर-संचारी रोगों से 2 मिलियन से अधिक लोगों की जान बचाई जा सकती है।
- ✓ **अस्पताल में भर्ती में कमी:** लगभग 7 मिलियन तीव्र घटनाओं और अस्पताल में भर्ती होने की घटनाओं को टाला जा सकता है।
- ✓ **आर्थिक लाभ:** इससे 199 बिलियन अमेरिकी डॉलर का अतिरिक्त आर्थिक लाभ प्राप्त करने में मदद मिलेगी।
- ✓ **उपयोगी निवेश:** प्रत्येक 1 अमेरिकी डॉलर के निवेश पर 19 अमेरिकी डॉलर का रिटर्न मिलने की संभावना है।
- ✓ **दीर्घकालिक निवेश:** DHA के लाभों को प्राप्त करने के लिए, सरकारों को औसतन 10 वर्षों में प्रति मरीज 1.6 यू.एस. डॉलर का निवेश करना होगा।

इंडियाAI मिशन

इंडिया एआई - इंडिपेंडेंट बिजनेस डिवीजन (IBD) की ओर से इंडियाएआई फेलोशिप के लिए नामांकन आमंत्रित किए जा रहे हैं। यह फेलोशिप कार्यक्रम विशेष रूप से बी.टेक और एम.टेक विद्यार्थियों के लिए डिज़ाइन किया गया है, जो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के क्षेत्र में अपनी विशेषज्ञता विकसित करना चाहते हैं।



इंडियाAI मिशन:

इंडियाAI मिशन भारत में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) प्रणालियों के विकास और परीक्षण के लिए एक मजबूत कंप्यूटिंग बुनियादी ढाँचे की स्थापना के उद्देश्य से शुरू किया गया है। इसका मुख्य लक्ष्य डेटा की गुणवत्ता को बढ़ाना, स्वदेशी AI तकनीक विकसित करना और नैतिक AI प्रथाओं को बढ़ावा देना है।

उद्देश्य:

- ✓ **AI प्रणालियों का विकास:** AI सिस्टम के विकास और परीक्षण में मदद करने के लिए आवश्यक बुनियादी ढाँचा स्थापित करना।
- ✓ **डेटा गुणवत्ता में सुधार:** उच्च गुणवत्ता वाले डेटा सेट तैयार करना।
- ✓ **स्वदेशी तकनीक का विकास:** भारत में विकसित AI तकनीकों को बढ़ावा देना।
- ✓ **प्रतिभाओं का आकर्षण:** शीर्ष प्रतिभाओं को आकर्षित करना।
- ✓ **उद्योग सहयोग:** उद्योग के साथ सहयोग को बढ़ावा देना।
- ✓ **AI स्टार्टअप का समर्थन:** प्रभावशाली AI स्टार्टअप्स को सहायता प्रदान करना।

वित्तीय सहायता:

- ☞ **बजट:** केंद्रीय मंत्रिमंडल ने मार्च 2024 में 10,372 करोड़ रुपये के इंडियाAI मिशन को मंजूरी दी थी।
- ☞ **GPU क्षमता:** मिशन का लक्ष्य 10,000 से अधिक ग्राफिक्स प्रोसेसिंग यूनिट (GPU) की कंप्यूटिंग क्षमता स्थापित करना है।

प्रमुख घटक:

- ✓ **इंडियाAI कंप्यूटिंग क्षमता:** 10,000 या उससे अधिक GPU का AI कंप्यूटिंग बुनियादी ढाँचा। AI बाजार का निर्माण जो AI नवोन्मेषकों को सेवाएं और पूर्व-प्रशिक्षित मॉडल प्रदान करेगा।
- ✓ **इंडियाAI नवाचार केंद्र:** लार्ज मल्टीमॉडल मॉडलों (LLMs) और डोमेन-विशिष्ट मॉडल के विकास में सहयोग प्रदान करना।
- ✓ **इंडियाAI डेटासेट मंच:** एकीकृत डेटा प्लेटफॉर्म जो भारतीय स्टार्टअप्स और शोधकर्ताओं को गैर-व्यक्तिगत डेटा तक पहुँच प्रदान करेगा।
- ✓ **इंडियाAI एप्लीकेशन डेवलपमेंट इनिशिएटिव:** विभिन्न समस्याओं के समाधान हेतु महत्वपूर्ण क्षेत्रों में AI का प्रयोग बढ़ावा देना।
- ✓ **इंडियाAI फ्यूचर स्किल्स:** स्नातक, स्नातकोत्तर और पीएचडी स्तर पर AI पाठ्यक्रमों का विस्तार। छोटे शहरों में डेटा और AI लैब स्थापित करना।
- ✓ **इंडियाAI स्टार्टअप फाइनेंसिंग:** डीप-टेक AI स्टार्टअप्स को समर्थन और फंडिंग प्रदान करना।

SSC TEST SERIES

CGL, CHSL, MTS, CET, CPO, GD,
Stenographer (Grades C & D)



Only at

99/- Year

Enroll Now!





APNI PATHSHALA

UPPSC, RO/ARO, BPSC, UP

TEST SERIES

UPPSC

(TEST SERIES)

- 35+ MOCK TESTS
- 40+ PYQ'S
- 180+ TOPIC WISE TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

299/-
YEAR

RO/ARO

(TEST SERIES)

- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

299/-
YEAR

BPSC

(TEST SERIES)

- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

299
YEAR

SSC

(TEST SERIES)

- 30 MOCK TESTS
- 28+ YEAR PYP
- 12 SECTIONAL TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

99/-
YEAR

RPF

(TEST SERIES)

- 40 MOCK TESTS
- 2 YEAR PYQ'S
- 4 SECTIONAL TEST
- 10 PRACTICE TEST
- 60 CURRENT AFFAIRS

99/-
YEAR



Download | Application

Apni Pathshala

7878158882

Apni.Pathshala Avasthiankit

AnkitAvasthiSir kaankit

ANKIT AVASTHI SIR

2024

GA FOUNDATION

RECORDED BATCH

Pathshala

Subject

HISTORY ,POLITY

GEOGRAPHY

ECONOMICS

Price

1499/-

Validity
1 Year

By Ankit Avasthi Sir

GA FOUNDATION

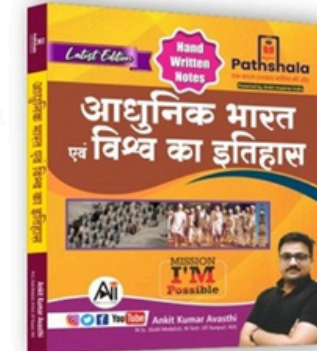
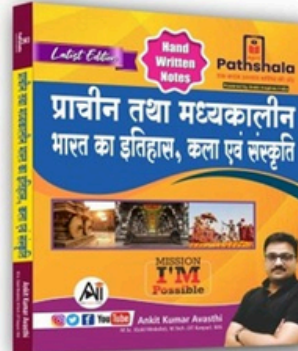
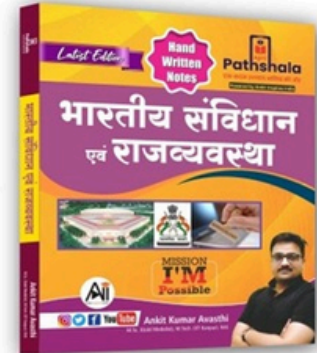
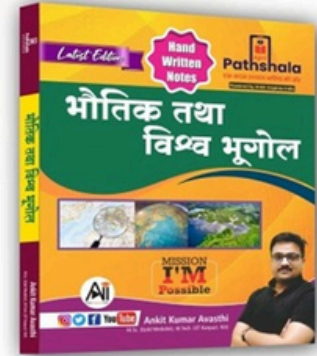
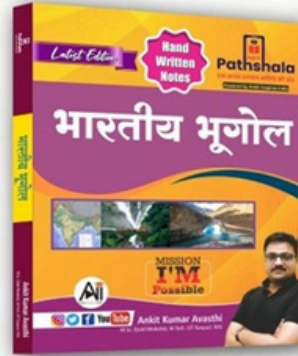
Hand Written
Notes


Apni Pathshala
एक कदम उज्ज्वल भविष्य की ओर


Ani
Ankit Inspires India

₹ **Only**
1999

4 पुस्तकों का सम्पूर्ण सेट



अधिक जानकारी के लिए दिए गए नंबर पर संपर्क करें....

 **7878158882**

RRB NTPC

TEST SERIES

- ✓ 100+ Mock Test
- ✓ 78 Sectional Test
- ✓ 40+ years PYPs
- ✓ 60+ Current affairs

TEST



Only

99 *Per Year*

Buy Now

